Special Issue January 2020

VIDYAWARTA

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

साहित्य और समाज चिंतन

संपादक
प्रा.नवनाथ जगताप

सहसंपादक
डॉ.अनिल कांबळे

Scanned by CamScanner

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**
Dr Gholap Bapu Ganpat
Parli Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**
saien Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**
Faculty Member,Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**
115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**
vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**
Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**
B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**
Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**
AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. – 09827983437
jubrajkhamari@gmail.com

- **Krupa Sophia Livingston**
289/55, Vasanthapuram,
ICMC, Chinna Thirupathy Post,
Salem- 636008 +919655554464
davidsvbts@gmail.com

- **Dr. Wagh Anand**
Dept. Of Lifelong Learning and Extension
Dr B A M U Aurangabad pin 431004
Mobi. 9545778985
wagh.anand915@gmail.com

- **Dr. Ambhore Shankar**
Jalna,Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Ashish Kumar**
A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
Ph.no: 09811055359

- **Prof. Surwade Yogesh**
Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**
At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**
Vanshree Nagar,Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

- **Dr.Varma Anju**
Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr.Pramod Bhagwan Padwal**
Associate Professor,Department of Marathi
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005.(Uttar Pradesh)
Mobi. 9450533466
pbpadwal@gmail.com

Scanned by CamScanner

12) हिन्दी कहानियों में अभिव्यक्त किन्नरों की वेदना
मीनाक्षी, बी. पाटील, बिजापुर ||53

13) प्रेमचंद की कहानियों में अभिव्यक्त दलित विमर्श
प्रा. इम्रान शेख, वाशी ||56

14) इक्कीसवी शती के 'मिस रमिया' उपन्यास में दलित स्त्री विमर्श
प्रा.डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड, सोलापुर ||59

15) नीरजा माधव की साहित्य में चित्रित सामाजिक विषमता
प्रा. समाधान नागणे, सांगली ||62

16) दलित साहित्य को प्रेरणा और ऊर्जा डॉ. अम्बेडकर
प्रा. डॉ. सचिन रमेशराव चोले, लातूर ||63

17) मृणाल पाण्डे – एक सशक्त महिला नाटककार
प्रा. डॉ. प्राजक्ता प्रकाश जोशी, सोलापुर ||67

18) नीरजा माधव की कहानियाँ : बुजुर्ग विमर्श
श्री विकास मगर, पुणे (सासवड) ||69

19) दलित साहित्य : एक विवेचन
प्रा.डॉ. ज्योती गायकवाड, सोलापुर ||71

20) रज्जन त्रिवेदी की कहानियों में नारी समस्या
डॉ. अर्चना शिवाजीराव कांबळे, सोलापुर (बार्शी) ||73

21) डॉ. दामोदर खडसे के कथा साहित्य में समाज
प्रा. शिवशंकर सोमण्णा ईश्वरकट्टी, पुणे ||75

22) कहानी साहित्य में अभिव्यक्त समाज
प्रा. डुरे सुरज विठ्ठल, सांगली ||78

23) राहुल सांकृत्यायन के कथा–साहित्य में अभिव्यक्त समाज
लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील, कोल्हापुर ||79

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

12

हिन्दी कहानियों में अभिव्यक्त किन्नरों की वेदना

मीनाक्षी. बी. पाटील
सह प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग, बी. एल्. डी. ई. संस्था,
एस्.बी. कला और के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय,
विजयपुर, कर्नाटक

वर्तमान समय विमर्श का समय रहा है। इक्किसवीं सदी का साहित्य हाशिये पर खड़े उन सभी को समाज के केंद्र में लाने का अविरत प्रयत्न कर रहा है, जो कभी समाज के भीतर रहकर भी न के बराबर थे। जो आज तक समाज में परित्यक्त थे उन्हें साहित्य ने सहर्ष स्वीकार किया है। उनकी भावनाओं को अपनी संवेदनाओं से अधिक न सही तो सही दुःखी मन के घावों को भरने का प्रमाणिक प्रयत्न तो हो ही रहा है। जिससे आज साहित्य में अनेक विमर्शों की चर्चा की जा रही है और समाज के अनेक उपेक्षित वर्गों पर साहित्य में चिन्तन-मनन हो रहा है। एक समय ऐसा था कि साहित्य में वृद्ध, स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक, किन्नर आदि पर कोई महत्वपूर्ण चर्चा नहीं होती थी। साहित्य में इनको कोई विशेष महत्व नहीं मिला था। लेकिन आज इन पर मुक्त रुप से चर्चाएँ हो रही हैं। विषेश रुप से किन्नरों की। साहित्य में इनकी उपस्थिति होती तो भी एक हास्य या गौण पात्र के पात्र के रूप में। किन्नरों की बात करें, तो उन्हें साहित्य के किसी भी कोने में स्थान प्राप्त नहीं था। आज समय, परिस्थिती और समाज में बहुत कुछ परिवर्तन आया है और इसी समय-परिवर्तन के कारण समाज में हाशिए पर खड़े किन्नरों को साहित्य के माध्यम से समाज के केन्द्र में लाया गया है। वे हाशियापरक जीवन को छोड़कर अपने अधिकारों की माँग कर रहे हैं। समाज में अपना अस्तित्व स्थापित करने की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह एक ऐसा समाज है, जो समाज के बीचों बीच रहता है, मगर समाज से कटा हुआ है। किन्नर विमर्श पर चर्चाएँ होने से पूर्व इनको देखने का दृष्टिकोण ही अलग था, लेकिन अब समाज के कुछ सभ्य इन्हें समझने लगे हैं, पहचानने लगे हैं, इनकी पीड़ा को कम करने का अथक प्रयास कर रहे हैं।

जब-जब किन्नरों की बात उठती है तब-तब हम उनके इतिहास को ढूँढने का प्रयास करते हैं, परंतु तब से लेकर अब तक समाज में किन्नरों के प्रति, जो तिरस्कार की भावना है उसमें परिवर्तन लाने का प्रयत्न शायद कभी नहीं हुआ है। आज साहित्यकार साहित्य के माध्यम से किन्नर समुदाय के प्रति स्नेह तथा सद्भावना को जागृत करने का प्रयास कर तो रहे हैं, परंतु उन्हें बस यहीं पर, बाजारों में, रेल के डिब्बों आदि में देखते हैं और उनके व्यवहारों से त्रस्त व्यक्ति उनके मानवाधिकारों के बारे में सोचना तो दूर उनको देखते ही दूर भागने लगता है। कभी भी किसी ने भी उनकी समस्याओं को, वेदना को पहचानने की कोशिश नहीं की। साहित्यकारों ने कहानियों के माध्यम से इनकी मूक वेदना, बेबसी, पीड़ा आदि को अभिव्यक्त करने का प्रयास अवश्य किया है।

एक निर्धारित लिंग के कमी के कारण त्यागे गये, दुरदुराए गये, सताए गये, अपमान के भागी, तिरस्कृतों को विश्व के संपूर्ण समाज में कई नामों से पहचाना जाता है। ये हिजड़ा, किन्नर, बृहन्नला, छक्का, शिकंडी, उभयलिंगी, तृतीयलिंगी, किन्नर, लैस्बियन आदि कई नामों से संबोधित हैं। "हिजड़ा उर्दू शब्द है जो अरबी के हिज्र से लिया गया है। जिसका आशय अपने कबीले को छोड़ना है। अर्थात् घर-परिवार एवं समाज से अलग होना।"[1] जिनके जननांग न तो स्पष्ट रुप से पुरुष के होते हैं न स्त्री के उन्हें किन्नर या लोकप्रिय संबोधन 'हिजड़ा' कहा जाता हैं। समाज में उनको घृणा की दृष्टि से देखा जाता है जबकि किन्नर भी मानव समाज का ही अंग है। मनुष्य रुप में जन्म लेने के अतिरिक्त किन्नर अभिशप्त जीवन जीने के लिए विवश हैं। किन्नरों के साथ होने वाले भेदभाव से उनका मनोबल टूटता है। उनके लिए न ही रोजगार की व्यवस्था है और न ही उनकी खुद की परिवार जैसी इकाई। सामाजिक भेदभाव की यह स्थिति समाप्त होनी चाहिए। डॉ. सूरज बड़त्या की लिखी कहानी 'कबीरन' में किन्नर कबीरन कहती है कि "अगर तुम चाहते हो कि कभी-भी कोई कबीरन घर से बेदखल न हो तो समाज की मानसिकता को बदलने का प्रयास करे। हम भी इंसान हैं, सांसे हैं, सपने हैं। हम तुम जैसे औरत या आदमी नहीं है तो क्या हुआ? तुम्हारी दुनिया हमें सामान्य नहीं मानती। जबकी तुम लोग सामान्य नहीं। ज़ेहनी बीमार हो। कभी जात में, कभी धर्म में, कभी औरत-मर्द में भेदभाव किये रहते हो। बीमार समाज है तुम्हारा। इसकी बीमारी दूर करने की कोशिश करो। बस हमारे जैसा इंसान-सा बर्ताव करो।"[2] जितने सुलजे हुए विचार एक किन्नर में हो सकते हैं वे सामान्य मानव में क्यों नहीं हो सकते? इनको पहचान दिलाने में कोई कुछ बोलता क्यों नहीं है? समाज का एक वर्ग ऐसा है जो दलित कहलाता है और जाति व्यवस्था के

Scanned by CamScanner

कारण सवर्ण समाज से दूर रहते हुए भी समाज का एक हिस्सा तो हैं। ये किन्नर तो दलितों में भी दलित हैं। ऐसे किन्नरों के प्रति सुमेघ सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहता है कि "हिजड़े समुदाय के लिए ऐसी हैवानियत और बेदखली किस वैचारिक सत्ता की बदौलत है? इनकी आवाज़, अस्मिता, गरिमा को लेकर कहीं कोई आन्दोलन नहीं? अपनापन नहीं? न ये आदमी हैं न औरत। पर हैं तो इंसान ही। जीते-जागते इंसान। इनकी विशेष अस्मिता की बात तो हमें ही करनी होगी। ये तो दलितों में भी दलित। अछूतों में भी अछूत, अनाथों के अनाथ हैं।"[3] किन्नर स्त्री या पुरुष न सही, है तो इंसान ही। सोमा भारती द्वारा रचित 'गली आगे मुड़ती है' में नील अपनी मनोव्यथा को व्यक्त करते हुए कहता है कि "....यह तो ताऊम्र सज़ा है। इन्सान होकर इन्सान न माना जाना। दर्द की इन्तिहा है....पर यह भी दवा कहाँ बनती है।"[4] अतः किन्नर भी इसी मानव समाज का एक अंग। मानव समझकर मानवीयता की दृष्टि से उन्हें देखना हमारा कर्तव्य बनता है।

किन्नरों के प्रति किसी को भी सहानुभूति नहीं होती। उनके प्रति एकदम संवेदनहीन तथा हृदयहीन हो जाते हैं। इनकी लाचारी पर किसी को दया नहीं आती। समाज तो क्या इनके जन्मदाताओं को भी लोकापवाद के भय से इन पर दया नहीं आती। इन्हें अकेला छोड़ दिया जाता है। डॉ. विमलेश शर्मा की 'मन मरीचिका' में सुलोचना मानव की बेबसी पर चिंता प्रकट करते हुए कहती है कि "कितनी श्रेणियाँ हैं इस वर्ग की, जिन्हें हम ट्रांसजेंडर्स कहते हैं। उसने इस स्टडी के मार्फत जाना कि मानव जिस समस्या से जूझ रहा हैं इन्हें एम.एस.एम. कहकर पुकारते हैं। मैन हू हेव सेक्स विद मेन, जिन्हें एम.एस.एम. या ट्रांसजेंडर्स कहा जाता है, में भी विभाजन है जिन्हें हिजड़ा, कोठी, पंथी, डांगा, डबल डेकर और गे कह कर पुकारा जाता है। जो केटेगरी हिजड़ा की है, वो बहुत दुर्लभ है, ऐसे केसेज ज्यादा नहीं होते, पर वाह रे हमारा समाज, कितनी आसानी से वह सभी को मुख्यधारा से खारिज कर देता है। कैसा समय है जहाँ एक तरफ स्त्रियों की यौन अभिव्यक्तियों पर तंज कसा जा रहा है वहीं तीसरे वर्ग को सामान्य मनुष्य ही नहीं समझा जा रहा। लोकापवाद से लोग उन्हें नितांत अकेला छोड़ देते हैं। कितना दुखद है यह।"[5] जवाहर लाल कौल 'व्यग्र' की कहानी 'ज्योति सूना नयन' में कल्पना अपने परिवार से किस तरह उपेक्षित रही और परित्यक्त की गई इसकी चर्चा करते हुए कहती है कि "मेरी दो बहिनें और मैं जो ठीक-ठाक हैं। उनमें कोई कमी नहीं है जिससे वह माँ-बाप की प्यार पाती रहीं और मैं उपेक्षित रही। मैंने जब जाना-समझा कि मेरे पूर्ण रुप से स्त्री होने में मेरी शारीरिक कमी है तो मैं दुखी हुई किंतु कर ही क्या सकती थी। मैं माँ के साथ उनकी घर-गृहस्थी में लगी रही। मेरा घर से बाहर जाना नहीं होता था तथा समय मिलने पर मैं घर के छत पर जाकर कुछ देर घूम लेती थी। मेरे-माँ-बाप मुझसे छुटकारा चाहते थे। मेरे पिता जब मैं करीब बीस वर्ष की रही एक दिन बनारस में मेरे इलाज का बहाना बनाकर मुझे बनारस रेलवे स्टेशन पर ले आए और मुझे प्लेटफॉर्म पर बैठाकर गायब हो गए। मैं समझ गई कि उनको मुझसे मुक्ति मिल गई।"[6] समाज में ऐसे कई किन्नर हैं, जो अपने मात-पिता द्वारा तिरस्कृत होते हैं। जग हँसाई से मुक्त होने के लिए अपने कलेज के टुकड़े से ही मुक्ति पाते हैं।

कई बार ऐसा भी होता है कि माँ-बाप अपने किन्नर बच्चों को अपना ने के लिए तैयार हो भी तो किन्नर समाज इसके लिए अवसर नहीं देता। बात कितनी ही छिपी हो किन्नर समुदाय को भनक लगने पर तुरंत ही उस बच्चे को लेने आ जाते हैं। बरबस ऐसे बच्चों को ले जाकर अपने गिरोह में सम्मिलित कर लेते हैं। लव कुमार 'लव' द्वारा रचित 'अन्धेरे की परतें' में परेश बलपूर्वक किन्नर समुदाय का शिकार बनता है। "किन्नर समुदाय पता नहीं परेश के जवान होने की प्रतीक्षा में ही था, एक रोज शाम ढलने को हुई तो पहुँच गए किन्नर लोग उसे लेने परेश कुछ देर तो छुपा रहा परंतु उन्होंने उसे बहला-फुसलाकर दरवाजा खुलवा ही लिया और अपने साथ चलने के लिए उस पर दबाव बनाने लगे, उसे इस निर्जीव समाज के कड़वे सच से अवगत कराने लगे कि तुम्हारी माँ के बाद ये लोग तुम्हें हाथ तक नहीं लगाएँगे और हमारी दुनिया में तुम राज करोगे....।"[7] परेश अपनी माँ से मिलने के लिए तड़पता है लेकिन किन्नर समुदाय इसकी अनुमति नहीं देतें। क्योंकि हमेशा से समाज उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करता आया है। इसका उल्लेख करते हुए लव कुमार 'लव' लिखते हैं कि "उन लोगों में इस खोखले समाज के प्रति भावनाओं का अभाव होता है हो भी क्यों समाज जब उनका है ही नहीं तो वो क्यों इस सड़ान्धते समाज पर तरस करें"[8] उपेक्षा के बदले उपेक्षा का मिलना सामान्य ही है। डॉ. रश्मि दीक्षित की लिखी कहानी 'नियति' में एसे हृदयद्रावक घटना का उल्लेख मिलता है। "एक दिन वे लोग आ ही पहुंचे। माँ का तो बुरा हाल था और पिताजी भी छत पर बेचैनी में टहल रहे थे। उनकी हिम्मत नहीं थी, अपने कलेजे के टुकड़े को किन्नरों को सौपने की। सभी किन्नर उनके घर के आगे धरना देकर बैठ गये थे। काली माँ अंदर आई और पता नहीं माँ को क्या-क्या समझाया और माँ ने मुझे काली माँ के हवाले कर दिया।"[9] न चाहते हुए भी अपने बच्चे को किन्नरों को हस्तांतरित

Scanned by CamScanner

करना पड़ता है। बच्चे को लेकर किन्नर काली माँ ने माँ से कहा- "अब तेरा घर हमारा है, इसे भूल जाना। हमारा कोई रिश्तेदार नहीं, कोई नाता-संबंधी नहीं हम भगवान के बच्चे है, और उन्हीं के सहारे रहते है।"[10] समाज से तिरस्कृत ये ईश्वर को ही अपना जन्मदाता मानते है और अपना जीवन अपने तरीके से जीना चाहते हैं।

[illegible] सिर्दोकी द्वारा विरचित 'अपना दर्द' में किन्नर राजू के माध्यम से किन्नरों की मनःस्थिति का चित्रण किया गया है। किन्नरों के मन में ऐसे कई प्रश्न है जो आज तक प्रश्नातीत ही हैं। क्योंकि समाज उनको अपनाता भी नहीं और उनकी इच्छा के अनुसार उन्हें जीने भी नहीं देता। "उसके दिमाग में बिजली की तरह अनेक प्रश्न कौंध रहे थे। क्या किन्नर होना पाप है। दुनिया में कितने लोग है जो अपनी मर्जी से जीना चाहते है। फिर हम अपनी मर्जी से क्यों नहीं जी सकते। हमें लोग गाली क्यों देते हैं।"[11] समाज जब इन पर हँसता है तो उनके मन को भी ठेस पहुँचती है। समीर को जब समाज नंगा करता है और उसके शारीरिक संरचना पर खिल्ली उड़ाता है तब समीर की अंतरात्मा प्रश्न करने लगती है कि "मुझे क्या बनाकर दुनिया में भेजा तूने? क्या जानवर का जन्म भी नसीब न था मुझे? क्या नरक की आग भी बदी न थी मुझे?"[12] डॉ. ललित सिंह राजपुरोहित की लिखी 'ट्रांसजेंडर' में कुमुद दैहिक संरचना पर उदासी व्यक्त करते हुए कहती है कि "जानती हो माँ..... बचपन से ही मैं घुटन की जिन्दगी जी रही हूँ, मैं हमेशा ईश्वर को कोसती रहती हूँ क्यों उसने मुझे एक गलत शरीर दिया, जब उसने मुझे नारी बनाया तो मेरे मन में पुरुषत्व का भाव क्यों भर दिया? यह कोई मृगलता नहीं है माँ.... एक कड़वी सच्चई है।"[13] आज भी यह वर्ग संवेदना से ज्यादा उपहास और तिरस्कार का विषय बना है। ये अपना जीवन जी तो रहे हैं लेकिन मन में बहुत सारे प्रश्नों को लेकर। जिनका उत्तर मिलना असंभव है।

दिल्ली जैसे बड़े शहरों से लेकर गाँव में रहनेवाले प्रत्येक किन्नर एक जैसा जीवन व्यतीत करते हैं। क्योंकि समाज इनका अस्तित्व मानता तो है लेकिन जानता नहीं है। हमेशा से हाशिये पर खड़े इस किन्नर समुदाय को घृणा की दृष्टि से देखा गया है। लेकिन जब कामुक पुरुष को अपनी देह की वासना मिटानी होती है, तो वह यह नहीं देखता है कि वह 'स्त्री' या 'किन्नर'। क्योंकि बड़े शहरों में ऐसे किन्नरों को जबरन देह व्यापार के लिए उपयोग में लाया जा रहा है। अब तक घृणा, तिरस्कार जो हो रहा था ओ अब कहाँ गया है? किन्नर जब बिस्तर पर आ जाती है तो एक पुरुष के लिए वह 'स्त्री' बन जाती है और समाज में 'किन्नर'। उर्मिला शुक्ल की 'मैं फूलमति और हिजड़े' में फूलमति का बार-बार बिहारी के द्वारा ग्राहकों को लाना औरर.."उस कुल्फी में जाने क्या था कि फूलमती को कुछ भी याद न रहा और सुबह जब उसकी आँख खुली तो बिहारी उसके पास था। मगर कपड़े इतने अस्त-व्यस्त? पेटीकोट और साड़ी में इतना लसलसापन कि उसे उबकाई आने लगी। वह बिहारी से बहुत कुछ पूछना चाहती थी मगर....।"[14] कभी कभार तो चाचा ताऊ भी इनका बलात्कार कर जाते हैं। "माँ के मरते ही एकाएक सब कुछ बदल गया था। वही मोहल्ला था, वही लोग थे, मगर अब उनकी नीयत बदल गयी थी। यहाँ तक जिन्हें वह चाचा ताऊ कहा करती थी वे भी अब-? उनके लिए फूलमती अब एक सहज सुलभ औरत मात्र थी।"[15] फूलमति एक किन्नर होते हुए भी पुरुषत्व का शिकार बनती है। समाज में ऐसी कई फूलमति होंगी जो पुरुषों से शोषित होती हैं।

समाज में सर्वदा से किन्नरों को तिरस्कृत दृष्टि से देखा जा रहा है। अतीत को टटोलते हैं तो, पाते हैं कि किन्नरों का उल्लेख हमें रामायण महाभारत जैसे पुराण कथाओं में देखने के लिए मिलते हैं। राजा महाराजाओं के समय के 'पूना' आज सिग्नल पर भीख माँग रहे हैं। अपने अधूरी देह के कारण मन की व्यथा को छिपाते हुए दूसरों की खुशियों में शामिल होकर बधाइयाँ दे रहे हैं। ऐसे समुदाय के प्रति समाज को संवेदनशील होना चाहिए। उनकी विकलांगता की हँसी उड़ाने के बजाय उन्हें मुख्यधारा पर लाने का प्रयास करना चाहिए। २१वीं सदी की साहित्यक प्रवृत्ति ने इन्हें साहित्य के द्वारा मुख्यधारा तक लाने का प्रयत्न किया है।

संदर्भ सूची :

१. थर्ड जेन्डर : हिन्दी कहानियाँ, भूमिका से, सं-डॉ. एम. फ़िरोज़ खान
२. हम भी इंसान हैं (किन्नरों पर केंद्रित कहानियाँ), सं- एम फ़िरोज़ खान, पृ. सं-१८
३. वही, पृ. सं-१६
४. वही, पृ. सं-२१
५. वही, पृ. सं-५२
६. वही, पृ. सं-६८
७. वही, पृ. सं-८५
८. वही, पृ. सं-८५
९. वही, पृ. सं-८८
१०. वही, पृ. सं-८८
११. वही, पृ. सं-९६
१२. वही, पृ. सं-७७
१३. वही, पृ. सं-११४
१४. वही, पृ. सं-३५
१५. वही, पृ. सं-३४

❑❑❑

Scanned by CamScanner